रविवार 5 अप्रैल, 2020

*विषय — **कल्पना***

स्वर्ण पाठ: 2 कुरिन्थियों 4 : 6

"इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 91 : 2, 3, 5, 6, 9-11**

2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।
3 वह तो तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा;
5 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,
6 न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है॥
9 हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
10 इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा॥
11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. याकूब 1 : 17

17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. भजन संहिता 46 : 1-3 (*से 1st* .), 4, 5

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;
3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥
4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।
5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।

3. मरकुस 3 : 7 (यीशु) (से :), 10

7 और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया।
10 क्योंकि उस ने बहुतों को चंगा किया था; इसलिये जितने लोग रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे।

4. मरकुस 5 : 21 (*से* :), 22, 23, 35, 36, 38-41 (*से 2nd* ,), 41 (युवती), 42

21 जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई।
22 और याईर नाम आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर, उसके पांवों पर गिरा।
23 और उस ने यह कहकर बहुत बिनती की, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे।
35 वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरू को क्यों दुख देता है?
36 जो बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा; मत डर; केवल विश्वास रख।
38 और अराधनालय के सरदार के घर में पहुंचकर, उस ने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।
39 तब उस ने भीतर जाकर उस से कहा, तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।
40 वे उस की हंसी करने लगे, परन्तु उस ने सब को निकालकर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर जहां लड़की पड़ी थी, गया।
41 और लड़की का हाथ पकड़कर उस से कहा, ... 'हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ'।
42 और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए।

5. मरकुस 6: 1 (*से*;)

1 वहां से निकलकर वह अपने देश में आया।

6. यूहन्ना 8 : 2, 26, 31-34, 39 (अगर), 40, 44, 56, 59

2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैं ने उस से सुना हे, वही जगत से कहता हूं।
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
33 उन्होंने उस को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?
34 यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।
39 यदि तुम इब्राहीम के सन्तान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते।
40 परन्तु अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो इब्राहीम ने नहीं किया था।
44 तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है।
56 तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उस ने देखा, और आनन्द किया।
59 तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया॥

7. इफिसियों 5 : 14 (जाग)

14 हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥

8. यूहन्ना 3 : 19

19 और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे।

9. 2 कुरिन्थियों 6 : 14-18

14 अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या
ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?
15 और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?
16 और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा
परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और
वे मेरे लोग होंगे।
17 इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो
मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।
18 और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है॥

10. इफिसियों 6 : 10-13

10 निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।
11 परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको।
12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार
के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।
13 इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा
करके स्थिर रह सको।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 472 : 24 (सब)-26

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है।

2. 275 : 10-19

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान

बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

3. 207 : 20-26

इसके एक कारण और भी हैं। इसलिए किसी अन्य कारण से कोई प्रभाव नहीं हो सकता है, और औकात में कोई वास्तविकता नहीं हो सकती है जो इस महान और एकमात्र कारण से आगे नहीं बढ़ती है। पाप, बीमारी, बीमारी और मृत्यु विज्ञान के नहीं होने के हैं। वे त्रुटियां हैं, जो सत्य, जीवन या प्रेम की अनुपस्थिति को रोकती हैं।

4. 215 : 15-21

हमें कभी-कभी यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया जाता है कि अंधेरा प्रकाश के समान वास्तविक है; लेकिन विज्ञान अंधकार को प्रकाश की अनुपस्थिति का केवल एक नश्वर अर्थ होने की पुष्टि करता है, जिसके आने पर अंधकार वास्तविकता का रूप खो देता है। तो पाप और दुःख, बीमारी और मृत्यु, जीवन, भगवान की अनुपस्थिति है, और सत्य और प्रेम से पहले त्रुटि के प्रेत के रूप में भाग जाते हैं।

5. 91 : 16-10

भौतिक स्वार्थ में लीन हम विचार और प्रतिबिंबित करते हैं, लेकिन जीवन या मन के प्रति पदार्थ को फीका करते हैं। भौतिक स्वार्थ का खंडन, मनुष्य की आध्यात्मिक और शाश्वत व्यक्ति के विवेक को प्रभावित करता है, और पदार्थ से प्राप्त गलत ज्ञान को नष्ट कर देता है या जिसे भौतिक इंद्रियां कहा जाता है।

कुछ गलत विचारों को यहां लिया जाना चाहिए ताकि आध्यात्मिक तथ्यों को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

विश्वास का पहला गलत विचार यह है कि पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता ईश्वर से अलग हैं।

दूसरा गलत विचार यह है, कि मनुष्य मानसिक और भौतिक दोनों है।

तीसरा गलत विचार यह है, कि मन बुराई और अच्छाई दोनों है; जबकि असली मन न तो बुराई हो सकता है और न ही बुराई का माध्यम, क्योंकि मन ही ईश्वर है।

चौथा त्रुटिपूर्ण विचार यह है, कि सामग्री बुद्धिमान है, और उस आदमी का भौतिक शरीर है जो स्वयं का हिस्सा है।

पाँचवाँ त्रुटिपूर्ण विचार यह है, कि सामग्री अपने आप में जीवन और मृत्यु के मुद्दों को रखती है, - कि सामग्री न केवल आनंद और दर्द का अनुभव करने में सक्षम है, बल्कि इन संवेदनाओं को प्रदान करने में भी सक्षम है। इस अंतिम विचार में निहित भ्रम से नश्वर शरीर का विघटन होता है, जिसे मृत्यु कहा जाता है।

मन अब और हमेशा के लिए पाप करने की शक्ति के साथ कपाल के भीतर एक इकाई नहीं है।

6. 92 : 25-31

हमें इसे वास्तविक कहने में शर्म आनी चाहिए जो केवल एक गलती है। बुराई की नींव ईश्वर के अलावा किसी चीज में विश्वास पर रखी गई है। यह विश्वास दो विपरीत शक्तियों का समर्थन करने के बजाय केवल सत्य के दावों का आग्रह करता है। यह सोचने की गलती कि त्रुटि वास्तविक हो सकती है, जब यह केवल सत्य की अनुपस्थिति है, हमें त्रुटि की श्रेष्ठता में विश्वास की ओर ले जाती है।

7. 191 : 28-32

भ्रामक इंद्रियां अपने स्वयं के विपरीत अनुष्ठानों को देख सकती हैं; लेकिन ईसाई विज्ञान में, सत्य कभी त्रुटि से नहीं मिलता है। मन का भौतिकता के साथ कोई संबंध नहीं है, और इसलिए सत्य शरीर की बीमारियों को बाहर निकालने में सक्षम है।

8. 546 : 23-26

क्रिश्चियन साइंस एक भौतिक युग में एक सूर्योदय है। होने के महान आध्यात्मिक तथ्य, प्रकाश की किरणों की तरह, अंधेरे में चमकते हैं, हालांकि अंधेरे, उन्हें न समझकर, उनकी वास्तविकता से इनकार कर सकते हैं।

9. 323 : 24-27

भगवान का सही विचार जीवन और प्रेम की सच्ची समझ देता है, जीत की कब्र को लूटता है, सभी पाप और भ्रम को दूर करता है कि अन्य मन हैं, और मृत्यु दर को नष्ट कर देते हैं।

10. 324 : 32-7

यीशु ने वास्तव में कहा, "जो कोई है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा" मतलब, वह जो जीवन के सच्चे विचार को मानता है वह मृत्यु में अपना विश्वास खो देता है। जिसके पास भलाई का सच्चा विचार है वह बुराई के सभी अर्थों को खो देता है, और इस कारण से आत्मा की शाश्वत वास्तविकताओं में प्रवेश किया जा रहा है। ऐसा मनुष्य जीवन में रहता है, - वह जीवन जो शरीर को सहायक जीवन के लिए नहीं बल्कि सत्य के लिए प्राप्त होता है, अपने स्वयं के अमर विचार को प्रकट करता है।

11. 242 : 9-14

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

12. 368 : 2-5, 14-19

विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है।

जब हम त्रुटि में होने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, तो हम आत्मा में अधिक विश्वास रखते हैं, बात करने की तुलना में अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में भगवान में अधिक विश्वास करते हैं, तब कोई भी भौतिक दमन हमें बीमार होने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकता

13. 494 : 25-29

आप इन दोनों सिद्धांतों में से कौन सा आदमी स्वीकार करने के लिए तैयार हैं? एक नश्वर गवाही है, जो बदल रहा है, मर रहा है, असत्य है। दूसरा शाश्वत और वास्तविक साक्ष्य है, सत्य का संकेत, इसकी गोद अमर फलों से ऊँची है।

14. 495 : 14-24

जब बीमारी या पाप का भ्रम आपको झकझोरता है, ईश्वर और उसके विचार के प्रति दृढ़ रहना अपने विचार में पालन करने के लिए उसकी समानता के अलावा कुछ भी अनुमति न दें। न तो डर और न ही संदेह को अपनी स्पष्ट भावना और शांत विश्वास का पालन करें, कि जीवन के सामंजस्यपूर्ण जीवन की मान्यता - जैसा कि जीवन है - किसी भी दर्दनाक भावना, या विश्वास को नष्ट कर सकता है, जो जीवन नहीं है। क्रिश्चियन साइंस, कॉरपोरल सेंस के बजाय अपनी होने की समझ का समर्थन करें, और यह समझ सच्चाई के साथ त्रुटि को दबा देगी, मृत्यु दर को अमरता से बदल देगी, और सद्भाव के साथ चुप्पी को दूर करेगी।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6